International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 04-07-2022; Accepted: 19-07-2022; Published: 03-08-2022
Volume 8, Issue 4, 2022, Page No. 89-93

1857 का महासंग्राम एवं तुकोजीराव होल्कर द्वितीय

दिनेश महाजन
देवी अहिल्याबाई विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सांराश
1728 के अमझेरा युध्द के पश्चातं एक ओर मराठा सैन्य प्रतिष्ठा में वृध्दि तथा नियमित चौथ एवं सरदेशमुखी वसूलने का अधिकार मालवा व बुंदेलखंड से प्राप्त हुआ। मल्हारराव होलकर ने मालवा क्षेत्र में होलकर राज्य की स्थापना की। होलकर वंश सदैव से एक शक्तिशाली राज्य के रूप में प्रतिष्ठित रहा। जिस समय 1857 स्वतंत्रा संग्राम अपने चरम शिखर पर था उस समय तुकोजीराव होलकर द्वितीय का शासन था। उनके द्वारा प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजों के प्रति निष्ठा रखते हूए विद्रोहियों का साथ भी दिया। वे कहीं ना कहीं इस बात से अवगत थे कि अंग्रेज दोगली नीति के तहत होलकर राज्य को मराठा वंश की तरह ही नष्ट कर देंगे। इसी के फलस्वरूप विद्रोहियों को गुप्त रूप से सहयोग महाराजा द्वारा प्रदान किया गया। इस विषय में आगे विद्वानो द्वारा प्रश्नचिन्ह लगाते हुए पक्ष–विपक्ष भी रखे गए।

मूल शब्दः 1857 का स्वतंत्रता संग्राम,ब्रिटिश सेना, तुकोजीराव होलकर द्वितीय, होलकर राज्य, महू छावनी, .च

प्रस्तावना
1857 के प्रथम स्वतंत्र संग्राम के दौरान होलकर रियासत के महाराजा तुकोजीराव द्वितीय थे। जिनका राज अभिषेक 27 जून 1844 को हुआ था।1857 के महासंग्राम में इंदौर और महू के विद्रोह के संदर्भ में अंग्रेज इतिहासकार मेलसन और फास्टर ने तुकोजीराव द्वितीय को विद्रोहियों का साथ देने वाला निरूपित किया है। इतिहासकारों ने स्पष्ट रूप से आरोप लगाया था कि महाराज की सहानुभूति विद्रोहियों के साथ थी।

चित्र 1

इंदौर रेजिडेन्सी पर हुए आक्रमण के प्रति महाराजा की नीति तथा उनकी समीक्षा
इंदौर रेजिडेन्सी मे हुए विद्रोह के समय महाराजा तुकोजीराव होलकर द्वितीय के रूप और उनकी नीति विवादास्पद हो गई।ड्यूरेंड के अनुसार क्रांति के समय होलकर रियासत अंग्रेजो कि स्वामी भक्त नही थी। और इसमत से स्पष्ट किया है कि विद्रोह के समय होलकर कि गतिविधिया और कार्य अंग्रेज विरोधी थी । और उसने विद्रोहियों का साथ दिया । इस मत के लिए अधोलिखित तथ्य है –

1. इंदौर में महाराजा होल्कर ने अश्वरोही, पैदल सिपाहियो की पलटन तथा तोपखाने के सैनिको को इंदौर रेजिडेन्सी पर आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहित किया। रेजिडेन्सी से ड्यूरेंड को जो पलयन करना पडा, उसके लिए उसने महाराजा को उत्तरदायी ठहराया।[2]
2. महू के तोपखाने के अधिकारी हंगरफोर्ड ने महू से बम्बई सरकार के सचिव को 5 जुलाई 1857 को पत्र लिखा था। उसमे स्पष्ट उल्लेख किया था कि महू के विद्रोहियों को रोकने के लिए या उनकी शक्ति नष्ट करने के लिए महाराजा ने कोई प्रयास नही किया। अपितु उन्हें खाद्यान, तोपे और खजाना दिया।[3]
3. इंदौर के विद्रोही नेता सहादत खा पर चलाये जा रहे अभियोग के समय चाश्मदीद गवाह ने कहा था कि सहादत खा सिपाहियों के सामने जोर–जोर से चिल्ला–चिल्ला कर कह रहा था – तैयार हो जाओ,तैयार हो जाओ छोटा साहिब लोग मारने को महाराजा साहब का हुकुम है। इससे भी स्पस्ट है कि महाराजा ने सिपाहियों को अंग्रेजो के विरुद्ध प्रोत्साहित किया था।[4]

4. 1857 के क्रांति के समय ड्यूरेंड को भय था कि मध्य भारत की छावनी में भी विद्रोह हो सकता है।ऐसीगुप्त सूचनाये मिली थी। इसलिए ड्यूरेंड 15 मई 1857 को लालबाग महल में महाराज से भेट की और निवेदन किया कि विद्रोह के समय सैनिक सहायता देगे। किन्तु महाराज ने कहा कि उसके सैनिक इस प्रकार कि सैनिक सहायता के अयोग्य है और ब्रिटिश सरकार की नियमित सेना के साथ वे कार्य नही कर सकेगे। हमारे पास देने के लिए गोला बरूद भी नही है।
5. अंग्रेज इतिहासकार मेलिसन ने भी अपनी पुस्तक History of Indian mutiny Vol-III में इस बात को स्वीकार किया है कि महाराजा को पूर्व ही इस बात कि जानकारी थी । उन्होंने केवल ड्यूरेंड से कह दिया था कि वह अपने सिपाहियों पर विश्वास नही करता है।
6. यदि महाराज को पता था कि सिपाहियों पर नियंत्रण शिथिल हो रहा है तो उन्हें सेवामुक्त कर देते या उनके विरूद्ध सख्त अनुशासन कदम उठाते। लेकिन उन्होंने इसके विपरीत सेंना में सैनिक भर्ती का आदेश दिया।
7. महाराजा ने विद्रोह समाप्त होने के बाद भी गुप्त रूप से अपनी सैनिक तैयारी को बनाये रखा था। इसकी जानकारी भारत सरकार के पास पहुची, तो सेण्ट्रल इंडिया के ए.जी.जी को लिखा था–
8. इंदौर राज्य के शस्त्रागार में शस्त्रों व तोपों की वृध्दि युद्ध स्तर पर की जा रही है। इस प्रकार की तैयारी राज्य के बाहर ब्रिट्रिश सरकार के विद्रोह की भावना को प्रोत्साहित करने के लिए की जा रही है। अतः इस प्रकार की गतिविधियो पर तुरंत प्रतिबंध लगाना चाहिए ।[5]
9. कर्नल ड्यूरेंड भारत सरकार के विदेश विभाग के सचिव बन गये, तब उसने इंदौर के ए.जी.जी. को लिखा था। यदि होलकर के द्वारा तोपों का निर्माण किया जा रहा है। तो वह किसी उद्देश्य के लिए है।वह व्यर्थखर्च करने वाला व्यक्ति नही है। उसका उद्देश्य संकटकाल में अपने आप को एक शक्ति के रूप में सिद्ध करना है।[6]
10. उपरोक्त लिखित इन प्रमाणों से कुछ विद्वानों का यह मत रहा है कि महाराजा तुकोजीराव द्वितीय ने अंग्रेजो के विरुध्द कार्य किया। इस मत के विपरीत महाराजा तुकोजीराव द्वितीय और कुछ अन्य विद्वान का यह मत रहा है कि उन्होंने अंग्रेजो के प्रति स्वामी भक्ति दिखायी और उन्होंने अंग्रेजो की सहायता की और विद्रोहियों का साथ नही दिया। इस मत के लिए निम्नलिखित तथ्य प्रस्तुत किये गए है।

महाराजा तुकाजीराव होलकर द्वितीय का विद्रोहियों के साथ न होने के प्रमाण

जब 1 जुलाई 1857 को इंदौर रेजिडेंसी पर विद्रोहियों ने आक्रमण किया। तो ड्यूरेंड ने रेजिडेंसी को नष्ट कर वहां से पलायन किया। तब महाराज ने अपने वकील गणपतराव को महू के कमांडिंग अधिकारी कर्नल प्लेट के पास अपना पत्र देकर भेजा। जिसमें उन्होंने उल्लेख किया कि जो सैनिक कर्नल ड्यूरेंड की सहायता के लिए भेजे गए थे। विद्रोही हो गए हैं और उनके साथ महिदपुर तथा सीहोर के सिपाही मिल गए हैं। उन्होंने भयंकर गलती की इस प्रकार इस पत्र के द्वारा महाराजा के वकील गणपतराव ने यह बताने का प्रयास किया कि विद्रोहियों के मामले में महाराज निर्दोष थे।[7]

1. महाराजा तुकोजी राव होलकर द्वितीय ने महू के कैप्टन हंगरफोर्ड को एक पत्र 5 जुलाई 1857 को लिखा था। इसमें उल्लेख किया है कि इंदौर और महू में दुर्घटनाओं के लिए उन्हें अत्यंत ही खेद है ।रेजीडेंसी की सुरक्षा के लिए सिपाहियों की जो टुकड़ी औरतोपे भेजी गई थी।उन्होंने किसी से झगड़ा कर लिया और रेजिडेंसी भवन पर गोलियां चला दी 2 जुलाई को महू में विद्रोहीं सिपाही इंदौर आ गए और उन्होंने दीन धर्म का झंडा फहराया और मुझसे उन्हें यूरोपियन को मांगा। जिन्हें मैंने राज महलशरण में दी थी और बाद में उन्होंने अधिकारियों को भी मांगा जो अंग्रेजों के पक्ष में थे। मैं ब्रिटिश सरकार की मित्रता और स्वामी भक्ति के मार्ग में सपने में भी नहीं हटा हूँ। इस पत्र के साथ महाराजा ने अपनी निर्दोषता प्रमाणित करने के लिए कैप्टन हंगरफोर्ड के पास राव रामचंद्र और बक्षी खुमान सिंह को भेजा था।[8]
2. अंग्रेजों के प्रति अपनी स्वामी भक्ति प्रदर्शित करने तथा उनको सहायता देने की बात बताने के लिए महाराजा तुकोजी राव ने कुछ अंग्रेज अधिकारियों और स्त्रियों को अपनी राजमहल में शरण दी थी। महाराजा ने उन्हें संरक्षण दिया था ।जब विद्रोहियों ने इन अंग्रेजों को महाराजा से मांगा। तब महाराजा ने उन्हें देने से इनकार कर दिया। उन्होंने विद्रोहियों को यह कहा कि शहर में आए हुए, व्यक्ति को शत्रु को सौंप देना हिंदू धर्म या इस्लाम की परंपरा में नहीं लिखा है।[9]
3. 6 जुलाई 1857 को महाराजा तुकोजी राव होलकर द्वितीय ने मेजर बंदे अली के नेतृत्व में 350 सिपाही और अकबर अली के नेतृत्व में कुछ अन्य सिपाही 3000 विद्रोहियों को रोकने और उन पर आक्रमण करने के लिए तथा उनसे इंदौर एजेंसी के लूट का माल छीन लेने के लिए भेजा।[10]
4. विद्रोहियों का दमन करने के लिए कुछ समय बाद 15 दिसंबर 1857 को विद्रोही बजरंग और महाराजा पल्टन के 990 सिपाहियों के हथियार छीन लिए गए और उन पर बगावत का अभियोग चलाया गया। इसी प्रकार 392 अश्वारोही सिपाहियों को हथियार विहीन कर उन पर भी अभियोग चलाया गया ।जो सिपाही बंदी बना लिए गए थे। उनमें से सातपर तत्काल अभियोग चलाया गया और उनमें से 6 कोप्राणदंड दिया गया 3 बंदियों को आजन्म कारावास का भी दंडदिया गया। इंदौर के ए.जी.जी हैमिल्टन ने कैप्टनहेचिसन को इन बंदियों पर चलाए जा रहे अभियोग का निरीक्षण करने के लिए नियुक्त किया था।[11]
5. 6 जनवरी 1858 को इंदौर के पोलिटिकल एजेंट हैमिल्टन ने महाराजा तुकोजीराव से उनके राज महल में भेट की। इस समय दोनों में इंदौर और महू में हुए विद्रोह के विषय में चर्चाएं हुई और महाराजा ने जो अपना पक्ष हैमिल्टन के सामने प्रस्तुत किया। उससे हैमिल्टन ने इस बात का उल्लेख अपने उस पत्र में किया हैजो उन्होंने 7 जनवरी 1858 को गवर्नमेंट ऑफ इंडिया को लिखा था।[12]
6. इंदौर रेजिडेंसी का कोष विद्रोहियों ने लूट लिया था पर महाराजा ने प्रयत्न करके इस कोष की कुछ धनराशि विद्रोहियों से बचा ली थी। उन्होंने 7 जुलाई 1857 को 4से 6 लाख बचा लिए अंग्रेज रेजिडेंसी का कोष 2400000 के गवर्नमेंट के नोट्स और रत्नों की एक पेटी बाबू चंद्रीलाल खजांची तथा बख्शी गणपतराव के साथ अंग्रेज अधिकारी कैप्टन हंगरफोर्ड के पास महू भेज दिया।[13]

7. इन बातों के प्रकाश में यह प्रमाणित किया जा रहा है, कि महाराजा तुकोजी राव होलकर द्वितीय ने विद्रोह के समय अंग्रेजों का साथ दिया वे अंग्रेजों प्रति की स्वामी भक्त रहे।[14]

परंतु होलकर राज्य के रिकार्ड्स में जो विभिन्न पत्र और रिपोर्ट उपलब्ध हुई है। उनके सूक्ष्म निरीक्षण और विशेषण में कुछ दूसरा ही चित्र सामने आता है । उन से विदित होता है कि महाराजा तुकोजी राव होलकर द्वितीय ने अप्रत्यक्ष रूप से विद्रोहियों का साथ दिया और उन्होंने इंदौर रेजिडेंसी पर आक्रमण करने के लिए अपनी ही सेना के सिपाहियों और अधिकारियों को प्रोत्साहित किया और उनकी उपलब्धियों पर उनको सम्मानित किया यही नहीं उन्होंने विद्रोह केपूर्व अनेक सिपाहियों को भी भर्ती किया इन तथ्यों का विश्लेषण अधोलिखित है।

महाराजा तुकोजीराव होल्कर द्वितीयद्वारा विद्रोहियों को रेजिडेंसी पर आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहन और विद्रोहियों की सहायता

महाराजा तुकोजीराव होल्कर मई 1857 में ही यह आभास हो गया था कि विद्रोह होने वाला है इसलिए उन्होंने रामपुरा, भानपुरा, रतलाम, मनासा, नारायणगढ़, जीरापुर, माचलपुर, महिदपुर, तराना, हसनपुर, देपालपुर, नेमावर ,कांटाफोड़, पेटलावदआदिकेअधिकारियों को यह लिखा था कि कुल 500 नवीन सिपाहियों की भर्ती करें। ऐसे प्रत्येक सिपाही को ₹4 प्रतिमाह दिया जाए आदेश 5 जून 1857 को प्रसारित किए गए थे।[15]

रामपुरा, भानपुरा केसूबा शिवचंद्र कोठारी ने मनासा से पत्र क्रमांक 37, दिनांक 19जून1857 को पत्र लिखकर महाराजा को सूचित किया था कि विलायती और मकरानी सशक्त सिपाही भर्ती कर लिए गए हैं । महाराजा तुकोजी राव होल्कर सेना के लिए अंग्रेज विरोधी मकरानी, विलायती, मेवाती तथा अन्य सिपाहियों को भर्ती कर रहे थे और दूसरी ओर कर्नल ड्यूरेंडको 9जून 1857 कहा कि वे अपने सिपाहियों में विश्वास नहीं रखते हैं।

क्या महाराजा ने सिपाहियों की नई भर्ती विद्रोहियों की संख्या में वृद्धि करने के लिए की थी ?यह विचारणीय प्रश्न हैं। ऐसा विदित होता है कि विद्रोह के समय अपनी नई भर्ती किए हुए सिपाहियों से विद्रोहियों की सहायता करना लक्ष्य रहा हो। यह उनकी अंग्रेज विरोधी भावना का प्रमाण है।

इन नए सिपाहियों को पर्याप्त गोला बारूद देने के लिए होल्कर‌राज्य के हिंगलाज गढ़ किले से पर्याप्त मात्रा में गोला–बारूद निकाला गया था। हिंगलाज गढ़ होलकरराज्य के उत्तरी भारत क्षेत्र में सघन वन में पर्वती दुर्ग रहा और होल्कर राज्य के उत्तरी भारत क्षेत्र में सघन वन में पर्वती दुर्ग रहा और होल्कर‌राज्य के प्रारंभ से ही दुर्ग में तोपों गोला बारूद का विशाल सैनिक भंडार रहा है। एक गोपनीय पत्र क्रमांक 48 दिनांक 27जुलाई1858 में स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि विद्रोह के समय 3000 तोपों के गोलें हिंगलाज गढ़ किले से निकाले गए थे । संभवत यह सिपाहियों में वितरित कर दिए गए थे। इस तथ्य को छिपाने के लिएबाह्यरूप से यह प्रकट किया गया था कि किले में गोला बारूद के भंडार में आग लग गई और वह नष्ट हो गया और सारा गोदाम जमीन के बराबर हो गया।[16]

रेजिडेंसी पर आक्रमण के 1 दिन पूर्व ही कर्नल ड्यूरेट को संभावित संकट की सूचना महाराजा होल्कर ने दी थी । बक्शी खुमान सिंह ने जो पत्र ब्रिटिश अधिकारी को लिखा था। उसमें इस आक्रमण की योजना स्पष्ट झलकती है इस पत्र का कुछ अंश इस प्रकार है।

होल्कर के सैनिकों को रेजिडेंसी भवन की सुरक्षा हेतु खान नदी के तट पर तैनात किया गया था । विद्रोह के दिन पूर्व रात्रि 30 जून 1857 को भीषण वर्षा हुई तथा इन सैनिकों की सारी सामग्री गीली हो गई। इस सैनिक टुकड़ी के स्थान पर दूसरी टुकड़ी की नियुक्ति नहीं की गई तथा सैनिकों को वापस बुला लिया गया । ऐसा मैंने जानबूझकर किया था क्योंकि मुझे विद्रोह का आभास हो गया था।[17]

कुछ समय बाद संभवता विद्रोह सैनिक तैयारी करने के लिए होल्कर दरबार का ऐसा एक संदेश निकाला की। दो तोप गाड़ियां निर्माण करने के कारखाने को व्यवस्थित किया जाए और नवल सिंह गोलंदाज को आवश्यक कर्मचारियों के साथ रामपुरा भानपुरा जिला तोपों के गोले के निर्माण का कार्य प्रारंभ करने के लिए भेजा गया । गोला बारूद के निर्माण के लिए महाराजा होल्कर ने रत्नागिरी जिले में विशेष व्यक्तियों में ₹15000 बाटे थे।ली वॉर्नर ने लिखा है कि महाराजा होलकर आखेट यात्रा के लिए रत्नागिरी गए थे । परंतु वास्तव में महाराजा तोपों और गोले के निर्माण के कार्य को देखने के लिए आखेट के बहाने गुप्त रूप से गए थे और अंग्रेज अधिकारियों को इसकी जानकारी नहीं थी।[18]

विद्रोह हेतु सैनिक तैयारी करने के लिए महाराजा ने कुछ सैनिक सामग्री भी अन्य बहाने से अंग्रेजो से प्राप्त कर ली थी। 15 मई 1857 को उन्होंने इंदौर के अंग्रेज अधिकारी कर्नल ड्यूरेंड को सूचना दी की अंग्रेजो की सुरक्षा के लिए उनके पास हथियार और गोला बारूद का अभाव हों गया है । इसलिए उन्होंने इंदौर के अंग्रेज ए.जी.जी. को निवेदन किया की वे मुबई के राज्यपाल लॉर्ड एलफिस्टन को यह लिखे की वे महाराजा को उनके सिपाहियों के लिए 300 जोड़ पिस्तौल 4 लाख कारतूस तथा अन्य सामग्री भेजने की व्यवस्था करें। इस सैनिक सामग्री को प्राप्त करने के लिए महाराजा ने जो पत्र लॉर्ड एलफिस्टन को लिखा था। उस पर इंदौर के एल.जी.जी. ने अपनी अनुशंसा की थी।[19]

होलकर राज्य के रिकॉर्ड्स में अभी तक ऐसा प्रमाण या पत्र नही मिला है जो यह स्पष्ट कर दे की महाराजा द्वारा जो यह गोला बारूद और सैनिक सामग्री प्राप्त की थी। वह कैसे कहा और किस प्रकार काम में ली गई। परंतु ऐसा उल्लेख है की इंदौर में विद्रोह होने के एक दिन पूर्व महाराजा ने सिपाहियों को ब्रिटिश सरकार से प्राप्त हुए थे और बाहरी रूप से यह बताया गया की सिपाहियों ने गोला बारूद का गोदाम लूट लिया था ये तीन तथ्य स्पष्ट करती है।

1. महाराजा तुकोजीराव होलकर द्वितीय अंग्रेजो के विरुद्ध किसी सैनिक गड़बड़ होने की आशा करते थे।
2. अंग्रेज विरोधी तत्व को ठोस सहायता देने के लिए महाराजा ने पर्याप्त गोला बारूद और हथियार प्राप्त कर लिया था ।
3. उन्होंने विद्रोहियों को राज्य के हथियार और गोला बारूद के उपयोग करने की अनुमति अप्रत्यक्ष या गुप्त रूप से दे दी थी।

यदि यह गोला–बारूद और हथियार जिनका ऊपर उल्लेख किया गया है । महाराजा अंग्रेज अधिकारियों के संरक्षण और अंग्रेज सरकार के लिए उपयोग में लाते तो उनका उल्लेख निश्चित ही उस समय करते। जबकि उन्होंने यह दावा किया था कि उन्होंने विद्रोह के समय अंग्रेजों को दिए गए संरक्षण और सहायता की। पुरस्कार स्वरूप कुछ भूमि खंड प्रदान किए जाएं पुरस्कार में कुछ प्रदेश को प्राप्त करने के लिए महाराजा ने अंग्रेजों से जो पत्र व्यवहार किया था। उसमें अंग्रेजों के पक्ष और सहायता में गोला–बारूद और हथियारों का उल्लेख कहीं भी नहीं है।

यह इस बात का प्रमाण है कि यह गोला–बारूद और हथियार अंग्रेजों के विरुद्ध काम में लाए गए थे। ऐसा प्रतीत होता है कि महाराजा होल्कर ने अपनी सेना के लिए हथियार और गोला बारूद का अभाव बनाकर के विशेष मात्रा में अस्त्र–शस्त्र अंग्रेजों से प्राप्त कर लिए थे। जिनसे कि वे तथाकथित विद्रोहियों की सहायता कर सकें। इसके अतिरिक्त यहां यह भी उल्लेखनीय है कि इस समय मेवाती, विलायती, मकरानी आदि जाति के सिपाही विशेष रूप से अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने की योजना बना रहे थे और विद्रोहियों की संख्या बढ़ा रहे थे। महाराजा होलकर ने ऐसी जातियों के सिपाहियों को भर्ती को रोकने की अपेक्षा उन्हें अपनी सेना में ऐसे सिपाहियों की भर्ती की और उन्होंने सैनिक सामग्री भी दी।

जब महाराजा के सिपाहियों ने इंदौर रेजिडेंसी पर आक्रमण किया। तब महाराजा लालबाग महल में रह रहे थे। जो रेजिडेंसी से लगभग 3 किलोमीटर दूर ही था। परंतु इतना समीप होने पर भी महाराजा अपने सिपाहियों को नियंत्रित करने के लिए ना तो स्वयं गएऔर न ही उन्होंने अपने सैनिक अधिकारियों को भेजा। उन्होंने ए.जी.जी कर्नल ड्यूरेंडया उसके अधिकारियों के साथ आक्रमण से सुरक्षा हेतु संरक्षण के लिए ना तो कोई पत्र व्यवहार किया और ना ही कोई संदेशवाहक भेजा। यदि वे चाहते तो ऐसा कर सकते थे।[20] यदि प्रातः काल 1 जुलाई को इंदौर में विद्रोह हुआ तो उसी दिन रात्रि को महू के सिपाहियों ने भीविद्रोह कर दिया। दोनों स्थानों में विद्रोह एक ही दिन हुआ। यह निश्चित है कि महाराजा को इसकी सूचना या आभास होगा पर इसको रोकने या महू के अधिकारियों को इसकी सूचना भेजने या शीघ्र ही सहायता भेजने के विषय में महाराजा ने कुछ नहीं किया। इसलिए कुछ विद्वानों का यह मत है कि

ष्जीम ंजजंबा ॅ उंकम ूपजी बवहदप्रंदबम ंज समेंजए प ्दिवज ंबजनंससल पदअमेजपहंजमक इल जीम ॅीैंतंरंष्[21]

हम विद्रोह के कुछ वर्षों बाद आक्रमणकारी सिपाहियों के नेता शहादत खान को पकड़कर बंदी बना लिया गया था और उस पर अंग्रेजों ने राजद्रोह का मुकदमा चला कर के उसे फांसी दे दी थी। उसके इस अभियोग का विवरण कभी प्रकाशित नहीं किया गया। परंतु अंग्रेज सरकार ने इसे गुप्त शासकीय कार्यवाही करके रखा सन 1955–56 में इस अभियोग और उसमें लिए गए। गवाहों का अंग्रेजी में हस्त लिखित विवरण इंदौर में शिव विलास पैलेस की रिकॉर्ड अलमारियों में रिकॉर्ड की खोज करते हुए प्राचार्य लुनिया को प्राप्त हुआ था। अब इस फाइल का बहुत कुछ अंश प्रकाशित हो चुका है।[22]

इसमें यह उल्लेख किया गया है कि सहादत खानने अश्वारोही सिपाहियों से और तोपखाने से इंदौर रेजीडेंसी पर हुए आक्रमण का बड़ा स्पष्ट वर्णन अपने बयान में किया है। उसका कथन था कि अंग्रेजों के विरुद्ध हुए युद्ध में होलकर महाराजा के सिपाही रेजिडेंसी पर आक्रमण कर रहे थे।

दो ऐसे पत्र पकड़े गए हैं। जो होलकर राजवंश के पुरोहितों द्वारा लिए गए थे और उन में यह उल्लेख था कि काली चीटियों ने लाल चीटियों को नष्ट कर दिया इससे झलकता है कि होलकर सेना ने अंग्रेजों का नाश किया कोल्हापुर की 27वी पलटन केआक्रमणकारी ने यह स्वीकार किया कि होलकर ने उनको अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए प्रोत्साहित किया था।[23]

महू में यूरोपियन तोपखानें के अधिकारी कैप्टन हंगरफोर्ड ने महू से लिखे हुए अपने पत्र नंबर 424 दिनांक 3 जुलाई 1857 को यह लिखा है कि महाराजा ने विद्रोहियों को तोपे दी और सहायता के लिए अनियमित अश्वारोही दिए महाराजा के लालबाग की तोपे पर रेजिडेंसी पर आक्रमण करने के लिए जाई गई थी और महाराजा ने इसके विरोध में अपनी अंगुली तक नहीं उठाई।

महाराजा की अश्वारोही सेना के अधिकारी सहादत खान सफलतापूर्वक रेजिडेंसी पर हुए आक्रमण का नेतृत्व किया था। रेजिडेंसी में अंग्रेजों के राजकोष को लूट लिया गया था। यूरोपियन के बंगलों को लूटा और उसमें आग लगा दी गई और कर्नल ड्यूरेंड अन्य अंग्रेजों के साथ सुरक्षा के लिए पलायन कर गया शहादत खान की इस उपलब्धि पर महाराजा होल्कर ने सहादत खा का सम्मान किया और उसे खिलअत प्रदान की।[24]

यदि इस सारी घटना और आक्रमण में महाराज का कोई हाथ ना था। तो सहादत खा को इस प्रकार सम्मानित करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। यदि महाराजा अंग्रेजों के प्रति मित्र और स्वामी भक्त होते तो उन्होंने तत्काल शहादत खान को बंदी बना लेना चाहिए था। उसके बुरे कार्य के लिए दंड देना चाहिए था परंतु ऐसा नहीं हुआ महाराजा ने उसे छोड़ दिया जिससे वह अपने घर चला गया।

अंग्रेज इतिहासकार मेलिसन का कहना है कि महाराजा इंदौर में अपने महल में 4 जुलाई1857 तक रहे और इस अवधि में विद्रोहियों के साथ निरंतर संपर्क साधे हुए थे । 4 जुलाई को भी रेजीडेंसी गए और विद्रोहियों के अधिकारियों और नेता बंसगोपाल तथा शहादत खान से उन्होंने चर्चाएं की बंसगोपाल 23वी पैदल सिपाहियों की पलटन का सूबेदार था । अंग्रेज की हत्या के रक्त से उसके हाथ रंगे हुए थे । कर्नल आर.एच.फेनविक केअनुसार महाराजा ने विद्रोही सिपाहियों को आटा,घी और खाद्यान्न दिया संभव है कि इन विद्रोहियों में महू के विद्रोही भी हो।[25]

नाना साहिबके कुछ एजेंटइंदौर में आ गए थे । वह 3 माह तक छद्म वेश में रहे और दिन में एक बार वे लिखित रूप में होलकर राज्य और उनकी राजधानी में होने वाली घटनाओं की सूचना पेशवा सरकार को देते थे। उन्होंने 22 अक्टूबर 1857 को महाराजा होलकर को पत्र लिखा था। इसमें उन्होंने उल्लेख किया था कि अहिल्याबाई के पवित्र नाम के लिए यह अधिक श्रेयकर होगा कि महू छावनी को भस्मीभूत करने के बाद आप अपनी सेना पेशवा को भेजें अन्यथा पेशवा बहुत ही क्रोधित हो जाएंगे।[26]

जब मध्यभारत क्षेत्र में सिपाहियों का विद्रोह फैल गया। तब तात्या टोपे और नानासाहेब दक्षिण मध्यभारत में राजाओ का जनता से ठोस सहायता प्राप्त करने के लिए सेना सहित आए थे। यद्यपि महाराजा होल्कर ने इनको कोई विशेष बाह्य

रूप से ठोस सहायता नहीं की थी । फिर भी उनके साथ अपना घनिष्ठ संपर्क बनाए रखा। यह बात महाराजा के विश्वसनीय व्यक्ति हरी त्रयम्बक के पत्रों से स्पष्ट विदित होती है। यह पत्र होलकर राज्य के शासकीय रिकॉर्ड में से प्राप्त हुए हैं।[27]

उपरोक्त तथ्य से इस बात का स्पष्ट संकेत करते हैं कि महाराजा तुकोजीराव होलकर द्वितीय विद्रोहियों का पक्ष ही नहीं ले रहे थे। अपितु आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहित भी कर रहेथे। उन्होंने विद्रोहियों की सहायता भी की यह संभव है विद्रोहियों से मिले हुए भी थे।[28]

मेलिसन का भी यह मत है की His contact were a very suspicious appearance अंग्रेजों के पक्ष में के हित के लिए विद्रोह को रोकने या उनका दमन करने की अपेक्षा महाराजा घटनाओं का क्रम देख रहे थे। विद्रोहियों को प्रोत्साहित करने के साथ–साथ भी यह देख रहे थे कि कौन से पक्ष की जीतने की संभावना है। जिससे कि वे जीतने वाले पक्ष की तरफ हो जाएं संभव है । मध्य भारत क्षेत्र में अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध करने की और उनकी स्वतंत्रता स्थापित करने की कोई योजना रही हो परंतु महू में शीघ्रता से अंग्रेजराज और सत्ता की पुनर्स्थापना हो जाने से अंग्रेजों के विरुद्ध कोई विशेष सफलताएं या उपलब्धि प्राप्त नहीं कर सके।

सन्दर्भ

1. Sanjay dubey, The residency Indore, 1818-1947, 58
2. Life of major general HM. Durant,1:220.
3. Proof. B.N. Lunia phases of freedom struggle in Madhya Bharat, 1857, 54.
4. Promising every assistance, “Maharaja Holkar tried to explain the capability of his troopsby tellingDurand thathis men could not cope with the regular troops of the British government and that “he had little ammunition to spare. Paper of proof Luniya,“complicity of the Maharaja Holkar with Mutineers.
5. Foreign Department, secret, 1883, 24-25.
6. Foreign Department, 1 march 1883, Sir H.M. Durand’s report July 15th, 1882.
7. Proof Luniya BN. Phases of Freedom Struggle in Madhya Bharat, 1857, 21.
8. होलकर सरकार रोजानामचा, 1 जुलाई 1857, 7वां पैरा] published in phases of freedom struggle in Madhya Bharat, page 27.
9. Proof B.NLuniya: Phases of Freedom Struggle in Madhya Bharat 1857, page 33.
10. Letter Number 4713to Ramakant bapuji, Mamledar Tarana and Mamleder’s letter from Tarana date 8.7.1857 and dated 9.7.1857, Major Bendealis letter from Tonk dated 10.7.1857 (Phases of freedom struggle in Madhya Bharat).
11. Letter number 1184 dated 29th December 1857 indore residency addressed to major general Sir H. Rose commanding Nerbudda field force, written by Robert Hamilton, Agent Governor General of Central India.
12. Freedom department secret, 30 July 1857, Number 33, page 1-4.
13. Foreign department secret, 28.8.1857 No. 347-50 letter to secretary to Government Bombay, Mhow July 8th by T. Hungerford, Capain commanding Mhow.
14. Letter of Eliot, Mhow fort dated 9th July 1857.
15. 5 जून 1857, जेष्ठ सुदी 13 शुक्रवार, आदेश नंबर 4848/C/1857 चींमे वि तिममकवउ ेजतनहहसम पद डंकीलं ठींतंजण
16. रामपुरा, भानपुरा की सुबा श्री शिवचंद्र कोठारी द्वारा बक्शी खुमान सिंह को लिखा हुआ पत्र जो 1858 की होलकर वारनिशी में प्राप्त हुआ (प्रोसीडिंग्स ऑफ दी एटीन्थ शेसन ऑफ दी इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस, कोलकाता 1955)।
17. एम.डब्ल्यू, बर्बे कृत महाराजा तुकोजी राव होलकर द्वितीय पृ 184।
18. प्रोसीडिंग्स ऑफ द एटीन्थ शेसन ऑफ द इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस, कोलकाता, 1955, प 240।
19. वही
20. C.I.A. File NO. 1774 of 1857, correspondence with Holkar about occurance of 1st july 1857 at Indore Residency, Letter No. 65 from Col. H.M. Durand, Offg. A.G.G. for C.I. to H.H. the Maharaja Tukojirao Holkar dated, 1857.
21. Foreign Secret Department, letter of C.I. Showers to J.R. Colvin Lt. Governor N.W. Province23.8, 1857:442-46:7-18.
22. Pfor. B.N. Luniya: Phases of Freedom Struggle in Madhya Bharat, 36-39.
23. K.L. Shrivastava: The Revolt of in Centeral India – Malwa, 1857, 135.
24. Holkar Darbar’s Rojanamancha 3rd july 1857 and Col. R.H. Fenwick’s diary, 1857.
25. Col. R.K. Menwick’s Diary 2nd, 857.
26. Proceedings of 18th session, Indian History Congress, Culcutta, 1855, 239.
27. Ibid, Page 252 & “He was not free from complicity with the multineers.”
28. Proceedings of the Eighteenth Session of the Indian History Congress, Culcutta, 242.